

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये किङ्किङ्काकाण्डे
॥ सप्तषष्टितमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ सप्तषष्टितमः सर्गः ॥

हनुमता समुद्रं लङ्घयितुमुत्साहस्य प्रकाशनं जाम्बरता तस्य
प्रशंसनं रेगेनोत्प्लरनाय हनुमतो महेन्द्रपरत आरोहणम्

तं दृष्ट्वा जृम्भमाणं ते क्रमितुं शतयोजनम्।
रेगेनापूर्यमाणं च सहसा रानरोत्तमम् ॥ 4.67.1 ॥

सहसा शोकमुत्सृज्य प्रहर्षेण समन्विताः।
रिनेदुस्तुष्टुर्बुशचापि हनुमन्तं महाबलम् ॥ 4.67.2 ॥

प्रहृष्टा रिस्मिताश्चापि ते रीम्भन्ते समन्ततः।
त्रिरिक्रमं कृतोत्साहं नारायणमिर प्रजाः ॥ 4.67.3 ॥

संस्तुयमानो हनुमान् र्यरर्धत महाबलः।
समारिक्त्य च लासूलं हर्षाद् बलमुपेयिरान् ॥ 4.67.4 ॥

तस्य संस्तुयमानस्य र्बुद्धैरानरपुङ्गरैः।
तेजसाहंपूर्यमाणस्य रूपमासीदनुत्तमम् ॥ 4.67.5 ॥

यथा रिजृम्भते सिंहो रिबृते गिरिगह्वरे।
मारुतस्यौरसः पुत्रस्तथा सम्प्रति जृम्भते ॥ 4.67.6 ॥

अशोभत मुखं तस्य जृम्भमाणस्य धीमतः।
अम्बरीषोपमं दीप्तं रिधूम ईर पारकः ॥ 4.67.7 ॥

হরীণামুখিতো মধ্যাৎ সম্প্রহৃষ্টতনুরুহঃ।
অভিরাদ্য হরীন্ বৃদ্ধান্ হনুমানিদমব্রবীৎ ॥ 4.67.8 ॥

আরুজন্ পর্তাগ্রাণি হ্তাশনসখোহনিলঃ।
বলরানপ্রমেযশ্চ রাযুরাকাশগোচরঃ ॥ 4.67.9 ॥

তস্যাহং শীঘ্ররেগস্য শীঘ্রগস্য মহান্ননঃ।
মারুতস্যৌরসঃ পুত্রঃ প্লরনেনাস্মি তৎসমঃ ॥ 4.67.10 ॥

উৎসহেযং হি রিস্তীর্ণমালিখন্তমিরাশ্বরম্।
মেরুং গিরিমসঙ্গেন পরিগন্তুং সহস্রশঃ ॥ 4.67.11 ॥

বাহুরেগপ্রণুনেন সাগরেণাহমুৎসহে।
সমাপ্লারযিতুং লোকং সপর্তনদীহৃদম্ ॥ 4.67.12 ॥

মমোরুজঙ্ঘারেগেন ভরিষ্যতি সমুখিতঃ।
সমুখিতমহাগ্রাহঃ সমুদ্রো ররুণালযঃ ॥ 4.67.13 ॥

পন্নগাশনমাকাশে পতন্তুং পক্ষিসেৱিতম্।
রৈনতেযমহং শক্তঃ পরিগন্তুং সহস্রশঃ ॥ 4.67.14 ॥

উদযাৎ প্রস্থিতং রাপি জ্বলন্তুং রশ্মিমালিনম্।
অনস্তমিতমাদিত্যমহং গন্তুং সমুৎসহে ॥ 4.67.15 ॥

ততো ভূমিমসংস্পৃষ্টরা পুনরাগন্তুমুৎসহে।
প্ররেগেনৈর মহতা ভীমেন প্লরগর্ষভাঃ ॥ 4.67.16 ॥

উৎসহেযমতিক্রান্তুং সর্ৱানাকাশগোচরান্।
সাগরাঞ্শোষযিষ্যামি দারযিষ্যামি মেদিনীম্ ॥ 4.67.17 ॥

পর্তাত্শ্চূর্ণযিষ্যামি প্লরমানঃ প্লরঙ্গমঃ।
হরিষ্যাম্যুরুরেগেন প্লরমানো মহার্ণৱম্ ॥ 4.67.18 ॥

লতানাং রিরিধং পুষ্পং পাদপানাং চ সর্ষশঃ।
অনুযাস্যতি মামদ্য প্লরমানং রিহাযসা ॥ 4.67.19 ॥

ভরিষ্যতি হি মে পন্থাঃ স্নাতেঃ পন্থা ইরাম্বরে।
চরন্তং ঘোরমাকাশমুৎপতিষ্যন্তমের চ ॥ 4.67.20 ॥

দ্রক্ষ্যন্তি নিপতন্তং চ সর্ষভূতানি রানরাঃ।
মহামেরুপ্রতীকাশং মাং দ্রক্ষ্যধ্বং প্লরঙ্গমাঃ ॥ 4.67.21 ॥

দিরমারূত্য গচ্ছন্তং গ্রসমানমিরাম্বরম্।
রিধমিষ্যামি জীমূতান্ কম্পযিষ্যামি পর্তান্।
সাগরং শোষযিষ্যামি প্লরমানঃ সমাহিতঃ ॥ 4.67.22 ॥

রৈনতেযস্য রা শক্তির্মম রা মারুতস্য রা।
ঋতে সুপর্ণরাজানং মারুতং রা মহাবলম্।
ন তদ্ ভূতং প্রপশ্যামি যন্মাং প্লুতমনুব্রজেৎ ॥ 4.67.23 ॥

নিমেষান্তরমাত্রাণে নিরালম্বনমম্বরম্।
সহসা নিপতিষ্যামি ঘনাদ্ রিদ্যুদিরোথিতা ॥ 4.67.24 ॥

ভরিষ্যতি হি মে রূপং প্লরমানস্য সাগরম্।
রিষণাঃ প্রক্রমমাণস্য তদা ত্রীন্ রিক্রমানির ॥ 4.67.25 ॥

বুদ্ধ্যা চাহং প্রপশ্যামি মনশ্চেষ্টা চ মে তথা।
অহং দ্রক্ষ্যামি রৈদেহীং প্রমোদধ্বং প্লরঙ্গমাঃ ॥ 4.67.26 ॥

মারুতস্য সমো রেগে গরুডস্য সমো জরে।
অযুতং যোজনানাং তু গমিষ্যামীতি মে মতিঃ ॥ 4.67.27 ॥

রাসরস্য সরজ্রস্য ব্রহ্মণো রা স্বযম্ভুরঃ।
রিক্রম্য সহসা হস্তাদমৃতং তদিহানযে ॥ 4.67.28 ॥

লঙ্কাং রাপি সমুৎক্ষিপ্য গচ্ছেযমিতি মে মতিঃ।
তমেরং বানরশ্রেষ্ঠং গর্জন্তমমিতপ্রভম্ ॥ 4.67.29 ॥

প্রহৃষ্টা হরযস্তত্র সমুদৈক্ষন্ত রিস্মিতাঃ।
তচ্চাস্য রচনং শ্ৰুৎৱা জ্ঞাতীনাং শোকনাশনম্ ॥ 4.67.30 ॥

উরাচ পরিসংহৃষ্টো জাম্বরান্ প্লবগেশ্বরঃ।
বীর কেসরিণঃ পুত্র রেগরন্ মারুতাত্মজ ॥ 4.67.31 ॥

জ্ঞাতীনাং রিপুলঃ শোকস্ত্রুয়া তাত প্রণাশিতঃ।
তত্র কল্যাণরুচয়ঃ কপিমুখ্যাঃ সমাগতাঃ ॥ 4.67.32 ॥

মঙ্গলান্যর্থসিদ্ধ্যর্থং করিষ্যন্তি সমাহিতাঃ।
ঋষীণাং চ প্রসাদেন কপির্বুদ্ধমতেন চ ॥ 4.67.33 ॥

গুরুণাং চ প্রসাদেন সম্প্লবৎ ৱং মহার্ণৱম্।
স্থাস্যামশৈকপাদেন যারদাগমনং তত্র ॥ 4.67.34 ॥

ৱদগতানি চ সর্ৱেষাং জীৱনানি বনৌকসাম্।
ততশ্চ হরিশার্দূলস্তানুরাচ বনৌকসঃ ॥ 4.67.35 ॥

কোহপি লোকে ন মে রেগং প্লবনে ধারযিষ্যতি।
এতানীহ নগস্যাস্য শিলাসঙ্কটশালিনঃ ॥ 4.67.36 ॥

শিখরাণি মহেন্দ্রস্য স্থিরাণি চ মহান্তি চ।
যেষু রেগং গমিষ্যামি মহেন্দ্রশিখরেৱহম্ ॥ 4.67.37 ॥

নানাধ্রুৱরিকীর্ণেষু ধাতুনিষ্পন্দশোভিষু।
এতানি মম রেগং হি শিখরাণি মহান্তি চ ॥ 4.67.38 ॥

प्लरतो धारयिष्यन्ति योजनानामितः शतम्।
 ततस्तु मारुतप्रथ्यः स हरिर्मारुतात्तजः।
 आरुरोह नगश्रेष्ठं महेन्द्रमरिमर्दनः ॥ 4.67.39 ॥

ब्रूतं नानारिधैः पुष्पैर्मृगसेरितशाद्वलम्।
 लताकुसुमसम्बाधं नित्यपुष्पफलद्रुमम् ॥ 4.67.40 ॥

सिंहशार्दूलसहितं मत्तमातङ्गसेरितम्।
 मत्तद्विजगणोद्घुष्टं सलिलोत्पीडसङ्कुलम् ॥ 4.67.41 ॥

महद्विरुद्धितं शृङ्गैर्महेन्द्रं स महाबलः।
 रिचचार हरिश्रेष्ठो महेन्द्रसमरिक्रमः ॥ 4.67.42 ॥

पादाभ्यां पीडितस्तेन महाशैलो महात्तना।
 ररास सिंहाभिहतो महान् मत्त ईर द्विपः ॥ 4.67.43 ॥

मूमोच सलिलोत्पीडान् रिप्रकीर्णशिलोच्छयः।
 रिद्रुस्तृगमातङ्गः प्रकम्पितमहाद्रुमः ॥ 4.67.44 ॥

नानागङ्गर्मिथुनैः पानसंसर्गकर्कशैः।
 उत्पतद्विरिहङ्गैश्च रिद्याधरगणैरपि ॥ 4.67.45 ॥

त्यज्यमानमहासानुः सन्निनीनमहोरगः।
 शैलशृङ्गशिलोत्पातस्तदाभूत् स महागिरिः ॥ 4.67.46 ॥

निःश्वसद्विस्तदा तैस्तु भुजगैरर्धनिःसृतैः।
 सपताक ईराभाति स तदा धरणीधरः ॥ 4.67.47 ॥

श्विभिस्त्राससम्भ्रान्तैस्त्यज्यमानः शिलोच्छयः।
 सीदन् महति कान्तारे सार्थहीन ईराधरगः ॥ 4.67.48 ॥

स रेगरान् रेगसडडहितान्ना
हरिप्ररीरः पररीरहणुता।
डनः सडडधाय डहानुडारु
जगडड लङ्कां डनसा डनस्त्री ॥ 4.67.49 ॥

॥ इतुयारुषे श्रीडडुरडडडडणे रालुडीकीडे आडडकारुडे
किष्किष्काकाणु सणुषष्ठितडः सर्गः ॥